तीन चोर

Three Thieves

एक रात तीन तेज़ तर्रार चोर चोरी करने निकले। उसी समय, राजा बाल सिंह आम नागरिक का वेश धारण कर नगर में घूम रहा था। रास्ते में राजा इन तीन चोरों से मिला और उसने पूछा, ''आप लोग कौन हैं?'' ''हम चोर हैं।''

राजा ईमानदार और बुद्धिमान व्यक्तियों को बहुत पसंद करता था। इसलिए जैसे ही उसने यह सुना कि वे लोग चोर हैं, उसे धक्का लगा क्योंकि उसके महल के लोगों ने तो उसे बता रखा था कि उसके राज्य में सिर्फ ईमानदार और मेहनती लोग ही रहते हैं।

चोरों ने पूछा, ''आप कौन हैं?''

''मैं भी चोर हूं,'' राजा ने तुरंत जवाब दिया।

यह सुन कर पहले चोर ने कहा, ''क्या तुम जानते हो! मैं तालों की ओर देखता हूं तो ताले खुल जाते हैं।''

''और मैं सिर्फ धरती को सूंघ कर बता देता हूँ कि ख़जाना कहां छिपा है,'' दूसरे चोर ने कहा।

One night, three sharp-witted thieves went out together to steal. At the same time, Balsińgh the king, disguised as an ordinary citizen was strolling in the city. On his way the king met the three thieves and he asked, "Who are you?"

"We are thieves."

The king, who was a great admirer of honest and intelligent people was taken aback as the people of his palace had always told him that there are only honest and hard-working people in his kingdom.

"Who are you," asked the thieves.

"I too am a thief ," replied the king.

Hearing this the first thief said, "Do you know I can break open locks simply by looking at them."

"I sniff the earth and tell exactly where the treasure lies," said the second thief.

And then, the third thief said,

फिर तीसरे चोर ने कहा, ''मैं एक बार यदि किसी व्यक्ति को देख लूं तो उसे सौ साल बाद भी पहचान सकता हूं।''
अब राजा की बारी थी, राजा ने कहा, ''मैं सिर हिला कर बंदी को जेल से छुड़ा सकता हूं। यदि आप लोग मुझे अपने साथ ले चलेंगे तो मैं लूट के माल का आधा हिस्सा लूंगा।''
चोरों के दिमाग में हमेशा पकड़े जाने और जेल जाने का भय बना रहता था इसलिए तीनों चोरों ने सोचा कि यह बहुत काम का आदमी रहेगा। यदि वे पकड़े गए तो वह उन्हें अपने सिर को हिला कर बचा लिया करेगा।
उन्होंने राजा को अपने साथ ले लिया, फिर चारों चोरी करने के लिए चले।
राजा चालाकी से उन्हें अपने महल में ले आया। पहले चोर ने तालों को देखा और वे खुल गए। दूसरे चोर ने ज़मीन को सूंघा और उन्हें नीचे तहखाने में छिपे ख़ज़ाने का पता चल गया। ख़ज़ाना चुराने के बाद जब चोर महल के बाहर जाने लगे राजा आंख बचा कर कहीं छिप गया और राजा के सिपाहियों ने तीनों चोरों को पकड़ लिया।

"Once I see a person, I can recognize him even after hundred years."
Now it was king's turn and he said, "I can get a person released from captivity by the turn of my head. If you take me along with you, I will take half of the loot."
Since the fear of being caught and jailed was always on their minds, the three thieves thought that he would be a very useful person. In case they were caught, he would have them released by the turn of his head.
So, they took the king along with them and all the four went to steal.
The king tactfully brought them to his own palace. The first thief looked at the locks and the locks were broken. The second thief sniffed the ground and discovered the hidden treasure in the cellar.
After stealing the treasure when the thieves were about to leave the palace, the king hid

अगले दिन चोरों को राजा के सामने लाया गया। जैसे ही उन्होंने दरबार में प्रवेश किया तीसरे चोर ने राजा को पहचान लिया कि यही हमारा चौथा साथी है, और कहा, ''महाराज! हम तीनों ने अपनी-अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया है। अब आपकी बारी है क्योंकि आप चौथे चोर हैं।''

यह सुन कर राजा ने अपना सिर हिलाया और चोरों को छोड़ दिया गया। राजा अपने सिंहासन से उठा, चोरों के पास आ कर बोला, ''आप सब बहुत गुणवान हैं, पर आप अपने गुण का गलत उपयोग कर रहे हैं। मेरी सलाह मानो और किसी अच्छे कार्य के लिए अपने गुणों का उपयोग करो। फिर आप लोगों को इस तरह छिपना नहीं पड़ेगा और आप अपनी बाकी जिन्दगी बिना किसी भय के बिता सकते हैं।

himself and got them arrested.

Next day, the thieves were brought before the king. The moment they entered the king's court, the third thief recognized the king as their fourth partner and said, "Your Highness, we three have displayed our skills. Now, it is your turn. You are the fourth thief."

On hearing this, the king turned his head and they were released.

The king got up from his throne, came close to the thieves and said, "All of you have great skills but you misuse them. Heed my advice and use your skills for a good cause. Then you will not have to hide like this, you can spend the rest of your life as good citizens."

महानिदेशक, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15-ए, सेक्टर 7, द्वारका,
नई दिल्ली - 110075 द्वारा प्रकाशित

अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,
डब्लू - 30, ओखला इन्डिस्ट्रयल एरिया, फेस 2,
नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित

Published by Director General
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector 7, Dwarka,
New Delhi - 110075

Printed at
Aravali Printers & Publishers (P.) Ltd.
W-30, Okhla Industrial Area, Phase - 2
New Delhi - 110020

चित्र व आलेख : विजय परमार
Illustrations and text : Vijay Parmar